International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 04, No. 04(I), October - December, 2022, pp. 236-238

महिला स्वरोजगार योजना विकास का अध्ययन

चांदनी मिश्रा*
डॉ. रत्नेश्वर दुबे**

सार

महिलाओं में रोजगार करने की भावना जागृत होती रहे वह सफल महिला उद्यमी बने यह अति आवश्यक है महिलाओं में आर्थिक चेतना तथा रोजगार के प्रति जागःकता हो तभी वह एक सफल उद्यमी के सामने आ सकती हैं महिला स्वरोजगार का जैसे–जैसे विकास होता जाएगा महिलाओं में आर्थिक निर्भरता आएगी एवं महिलाओं में आत्मविश्वास का भी विकास होगा और उन में स्वयं निर्णय लेने की क्षमता का भी विकास हो।

शब्दकोश : *रीवा जिला, महिला स्वरोजगार, विकास नीति, आर्थिक चेतना, आर्थिक निर्भरता।*

प्रस्तावना

महिला स्वरोजगार महिला उद्योग व्यवसाय वाणिज्य के विकास में सहायक है आवश्यकता आविष्कार की जननी है वह समय एवं परिस्थितियां समाज के परिवर्तन के लिए मूलाधार का काम करती है महिला स्वरोजगार विषय पर गहराई से अनुभव किया गया है कि महिलाओं को संपत्ति एवं समस्त प्रकार के अधिकार दिए जाने चाहिए जिससे उन्हें सदियों से वंचित कर दिया गया था देश की प्रगति जानने के लिए वहां की महिलाओं की स्थिति का आंकलन अति आवश्यक है।

महिला स्वरोजगार अर्थात महिलाओं को शक्तिशाली बनाना कोई भी राष्ट्र महिलाओं को सशक्त बनाए बगैर प्रगति करने की कल्पना तक नहीं कर सकता है महिला स्वरोजगार का आशय यह है कि महिलाओं को भी पुरुषों के बराबर सामाजिक,राजनैतिक वैधानिक एवं आर्थिक क्षेत्र में स्वयं निर्णय लेने की स्वतंत्रता प्राप्त कराई जाए अर्थात महिलाओं को प्रत्येक क्षेत्र में पुरुषों के बराबर का हक प्राप्त हो एवं समाज में महिलाओं के साथ किसी भी प्रकार का कोई भेदभाव ना कियाजाएप्रत्येक महिला को व्यवसाय एवं उधम क्षेत्र में आने के समस्त अधिकार मिलने चाहिए। महिलाओं में बढ़ती शिलाने उनमें जागःकता एवं महत्व कार्य को जन्म दिया है जिससे उनका आत्म मनोबल बढ़ा है महिलाएं स्वयं के व्यवसाय में रुचि लेने लगी है उनमें पूर्णतया खुद को प्रवेश करने लगी हैं महिलाओं मेंउधम व व्यवसाय क्षेत्र में आने के बाद उनके उधम व्यवसाय स्थापित होते गए।

शोध क्षेत्र से संबंधित पूर्व में किए गए शोधों की संक्षिप्त समीक्षा

अनिल कुमार (2004) ने हरियाणा की 120 महिला उद्यमिता का अध्ययन का अध्ययन क्षेत्र चयन के संदर्भ में किया और पाया कि अधिकांश महिलाएं घर के समीप और साथ ही बाजार के समीप अपने व्यवसाय का संचालन करना चाहती हैं।

दास गुप्ता बी. (2004) ने उद्यमिता हेतु प्रेरक घटकों के संबंध में 108 उद्यमियों का अध्ययन किया जिससे प्रेरक घटकों को निम्न उद्यमी आयामों में बांटा गया सामाजिक आयाम आर्थिक आयाम कार्यक्षेत्र आयाम एवं व्यक्तिगत आयाम।

---

* शोधार्थी, वाणिज्य विभाग, राजकीय ठाकुर रणमत सिंह कॉलेज, रीवा, मध्य प्रदेश।
** प्राध्यापक, नईगढ़ी कॉलेज, रीवा, मध्य प्रदेश।

बिंदु लिंकन स्केल के द्वारा अध्ययन में पाया गया कि उद्यमी घटक सर्वाधिक प्रभावशाली प्रेरक घटक है,जिनके अंतर्गत उपलब्धि की इच्छा, स्वयं की क्षमता व कौशल में विश्वास, परिवर्तन व नवप्रवर्तन की चाह उद्यमिता हेतु प्रमुख प्रेरक घटक रहे हैं।

जायसवाल (2004) ने बड़ोदरा शहर की 113 महिला उद्यमियों का अध्ययन किया अध्ययन का मुख्य उद्देश्य व्यवसाय के प्रेरक घटको एवं वर्तमान व्यवसाय में चयन के कारणों को ज्ञात करना था। अध्ययन मेंमुख्य :प से पाया की "आर्थिक स्वतंत्रता" उद्यमिता के क्षेत्र में प्रवेश का प्रमुख कारण था, दूसरे व तीसरे पर क्रमशः कुशलता का उपयोग रचनात्मक कार्य की इच्छा उद्यमिता हेतु प्रेरक घटक रहे हैं।

उद्देश्य

महिला स्वरोजगार विकास के उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

- महिलाओं की सामाजिक आर्थिक एवं पारिवारिक स्थिति का विश्लेषण करना ।
- महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाना तथा उन्हें व्यवसाय एवं उधमसंबंधित संपूर्ण जानकारी देना ।
- महिला स्वरोजगार के विकास में बाधक विभिन्न समस्याओं का अध्ययन करना ।
- महिलाओं को पुरुषों के बराबर भागीदारी प्राप्त करवाना तथा उनकी सामाजिक आर्थिक राजनैतिक वैधानिक सभी क्षेत्रों मेंमहिलाओं कोमजबूत बनाना।
- राज्य सरकार द्वारा महिलाओं को दिए जाने वाले सोच में वित्तीय सहायता प्रदान करना एवं महिलाओं को शासन की नीतियों से अवगत कराना।
- महिलाओं को स्वयं के रोजगार के प्रति जागःक करना व उनकी समस्याओं के निराकरण हेतु समाधान खोजना।

उपकल्पना

उपकल्पना का शाब्दिक अर्थ है पूर्व चिंतन अर्थात पहले से सोचा गया कोई विचार या चिंतन। गुड्डे एवं हट्टने इन्हें परिभाषित करते हुए लिखा है कि "उपकल्पना भविष्य की ओर देखती है या एक तर्क पूर्ण वाक्य जिसकी वैधता की परीक्षा की जा सकती है यह सत्य भी सिद्ध हो सकती है और असत्य भी"।शोध विषय से संबंधित सामग्री के अध्ययन एवं अनुभव के आधार पर शोधार्थी कुछ परी कल्पनाएं स्थापित की है वह इस प्रकार है–

- रीवा जिले में लघु एवं कुटीर उद्योगों की महिला स्वरोजगार विकास में योगदान हो रहा है।
- रीवा जिले में सभी महिला उद्यमियों को शासकीय योजनाओं का पर्याप्त लाभ प्राप्त है।
- उद्यमिता की अज्ञानता शोषण गरीबी और पिछड़ेपन का प्रमुख कारण अशिक्षित होना है।

शोध प्रविधि

प्रत्येक सर्वेक्षण में कुछ पद्धतियां व तरीकेअपनाए जाते हैं, जिनके आधार पर सर्वेक्षण किया जाता है ऐसी विधियां क्षेत्र विशेष को ध्यान में रखकर अपनाई जाती हैं अध्ययन पद्धति से तात्पर्य किसी भी कार्य को संपादित व दिशानिर्देश निर्देशन में सहायक होता है।

अध्ययन क्षेत्र का परिचय

रीवा जिले का निर्माण सन 1950 में हुआ था रियासतों के विलय से पूर्व रीवा राज्य उत्तरी एवं दक्षिणी जिलों में विभक्त हो गया था जिसमें वर्तमान रीवा सीधी शहडोल उमरिया जिले शामिल थे जिले में 09 विकास खंड है जिनके नाम निम्नलिखित हैं रीवा सिरमौर त्योथररायपुर कर्चुलियान मऊगंज गगेवहनुमाना एवं नईगढ़ी हैं।

भौगोलिक स्थिति

रीवा जिला 24018 से 25012 उत्तरी अक्षांश तथा 80020 से 81012 पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है।

रीवा जिले की सीमाएं

रीवा जिले के उत्तर में उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर दक्षिण में मध्य प्रदेश के सीधी दक्षिण पश्चिम में सतना जिले की सीमाएं लगती हैं रीवा जिले का क्षेत्रफल 63 से 14 वर्ग किलोमीटर है।

जलवायु

रीवा जिले की जलवायु विषम है यहां की जलवायु मुख्य रूप से तीन वर्गों में विभाजित की जाती है – ग्रीष्म ऋतु, वर्षा ऋतु एवं शीत ऋतु।

तापमान

ग्रीष्म काल का औसत तापमान 400 से 450 सेंटीग्रेड तक एवं शीतकालीन औसत तापमान 70 सेंटीग्रेड तक रहता है। जिले का अधिकतम तापमान मई माह में तथा न्यूनतम तापमान जनवरी माह में रहता है।

वर्षा

जिले की औसत वर्षा 137 सेंटीमीटर से 144 सेंटीमीटर रहती है मुख्य नदियां जो जिले में प्रभावित होती हैं तो उन भी है बिछिया महाना बेलन गोरमा कारियारी।

रीवा क्षेत्र की विशेषतायें

विंध्य पर्वत श्रंखला में स्थित रीवा जिला समद्विबाहु त्रिभुज आकार है जिसकी आधार भुजा पश्चिम की मिलती है रीवा जिले में मुख्यतः चूना पत्थर एवं बॉक्साइट का भंडार है तथा रीवा की कैमूर पर्वत श्रेणी प्रसिद्ध सफेद शेर की प्राप्त स्थल है।

निष्कर्ष

कोई भी शोध कार्य तभी सफल माना जाता है जब उसका वास्तविक परिणाम निकले एवं सही परिणाम सामने आए तथा परिणाम सार्थक हो। शोध के परिणाम स्वःप महिला स्वरोजगार मूलक योजनाओं का सही निरीक्षण व आकलन हो पाएगा महिलाओं की आर्थिक स्थिति विकास से जुड़ी विभिन्न सरकारी तथा गैर सरकारी योजनाओं का वर्णन व उससे महिला स्वरोजगार योजनाओं के योगदान का स्पष्टीकरण हो पाएगा और यह भी सिद्ध होगा कि महिला स्वरोजगार योजना किस प्रकार अर्थव्यवस्था पर प्रभाव डाल रही हैएवं महिला के सशक्त होने से राष्ट्र की अर्थव्यवस्था पर क्या प्रभाव पड़ रहा है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अग्निहोत्री रामप्यारे – "रीवा राज्य का इतिहास" साहित्य परिषद भोपाल 1972
2. योजना–सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय पटियाला हाउस नई दिल्ली 2000
3. उद्योग व्यापार केंद्र रीवा 2017
4. औद्योगिक मार्गदर्शिका– जिला उद्योग केंद्र वाराणसी।
5. स्वरोजगार मार्गदर्शिका द्वितीय संस्करण उद्यमिता विकास केंद्र मध्य प्रदेश 60 जेल रोड जहांगीराबाद भोपाल 1999
6. अनिल कुमार इंटरप्राइज लोकेशन उद्यमियों की पसंद।
7. दासगुप्ता भी (फरवरी 2004) एंटरप्रेन्योरल मोटिवेशन पुरुष और महिला उद्यमियों का तुलनात्मक अध्ययन, रिसर्च पेपर नेशनल में प्रस्तुत किया गया महिला उद्यमिता एमएस विश्वविद्यालय बड़ोदरा पर संगोष्ठी।

❖◆❖